National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(66): 28-30
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

आदित्य
शोधछात्र, संस्कृत विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय

शोध-निर्देशक
डॉ. चन्दन कुमार झा
संस्कृत विभाग, लक्ष्मीबाई कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय

Correspondence:
आदित्य
शोधछात्र, संस्कृत विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय

सत्कार्यवाद से ज्ञानमीमांसक यथार्थवाद तक : सांख्य दर्शन के ज्ञान के तात्त्विक मूल

आदित्य, डॉ. चन्दन कुमार झा

शोध सारांश

सांख्य दर्शन भारतीय तत्त्वमीमांसा का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है, जिसका मूल सिद्धांत 'सत्कार्यवाद' है। यह शोध पत्र इस अवधारणा का अन्वेषण करता है कि कैसे सांख्य का कार्य-कारण सिद्धांत केवल सृष्टि की उत्पत्ति तक सीमित न रहकर, उसकी ज्ञानमीमांसा को 'यथार्थवाद' के रूप में स्थापित करता है । सत्कार्यवाद का यह मत कि "कार्य अपनी उत्पत्ति से पूर्व कारण में सत् रहता है", यह सिद्ध करता है कि ज्ञान शून्य या कल्पना पर आधारित न होकर 'वस्तुनिष्ठ सत्य' पर आधारित है ।

इस शोध पत्र में सत्कार्यवाद की व्यावहारिक सत्यता को सिद्ध करने के लिए नैदानिक आयुर्वेद के एक अध्ययन का संदर्भ लिया गया है, जिसमें "आनाह" रोग की चिकित्सा में हरितकी के प्रयोग का विश्लेषण किया गया है। आकांक्षा अनुपम और आर. आर. द्विवेदी द्वारा किया गया यह अध्ययन सांख्य के **"शक्तस्य शक्यकरणात्"** (सामर्थ्यवान से ही कार्य संभव) और **"असदकरणात्"** (असत् से उत्पत्ति नहीं) जैसे हेतुओं को अनुभवजन्य प्रमाण में बदलता है। अध्ययन में पाया गया कि हरितकी (सत् कारण) देने पर 84.21% तक लाभ हुआ, जबकि प्लेसीबो (असत् कारण) निष्प्रभावी रहा ।

यह नैदानिक प्रमाण इस शोध के मुख्य तर्क को पुष्ट करता है कि सांख्य दर्शन में 'ज्ञान' और 'सत्ता' एक दूसरे से पृथक नहीं हैं । यदि कारण में कार्य की सत्ता यथार्थ है, तो उस कारण-कार्य संबंध का ज्ञान भी 'यथार्थ' ही होगा । अतः, यह शोध पत्र निष्कर्ष निकालता है कि सांख्य का सत्कार्यवाद, तात्विक स्तर पर 'ज्ञानमीमांसक यथार्थवाद' की नींव रखता है, जहाँ चिकित्सा विज्ञान जैसे व्यावहारिक क्षेत्र इसकी सत्यता की पुष्टि करते हैं ।

प्रस्तावना

भारतीय दर्शन की सुदीर्घ परंपरा में सांख्य दर्शन का स्थान अद्वितीय है। यह केवल एक विचार पद्धति नहीं है, बल्कि 'सत्य' को देखने की एक वैज्ञानिक दृष्टि है। अक्सर दार्शनिक विमर्शों में तत्त्वमीमांसा और ज्ञानमीमांसा को अलग-अलग करके देखा जाता है, लेकिन सांख्य दर्शन में ये दोनों एक-दूसरे में गुंथे हुए हैं । इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य यह स्थापित करना है कि सांख्य की ज्ञानमीमांसा—जिसे हम 'यथार्थवाद' कहते हैं—हवा में नहीं लटकती, बल्कि वह सांख्य के कार्य-कारण सिद्धांत 'सत्कार्यवाद' की ठोस नींव पर खड़ी है । यदि हम यह मान लें कि जगत (कार्य) सत्य है क्योंकि वह अपने कारण (प्रकृति) में पहले से विद्यमान था, तो उस जगत का हमारा ज्ञान भी 'सत्य' और 'यथार्थ' होना ही चाहिए ।

सत्कार्यवाद : दार्शनिक द्वंद्व और स्थापना

सत्कार्यवाद सांख्य दर्शन का हृदय है। ईश्वरकृष्ण की सांख्यकारिका और उस पर वाचस्पति मिश्र की टीका सांख्यतत्त्वकौमुदी में इस सिद्धांत को स्थापित करने के लिए एक अत्यंत रोचक और तार्किक बौद्धिक संघर्ष देखने को मिलता है। वाचस्पति मिश्र ने अन्य दार्शनिक मतों का खंडन करते हुए सत्कार्यवाद का मंडन जिस कुशलता से किया है, वह दर्शनीय है।

पूर्वपक्षों का खंडन

सांख्यतत्त्वकौमुदी में वाचस्पति मिश्र सबसे पहले उन मतों को खारिज करते हैं जो 'सत्' की तार्किक व्याख्या करने में असमर्थ हैं। वे मुख्यतः तीन मतों को चुनौती देते हैं:

• बौद्ध मत (असतः सत् जायते): बौद्ध दर्शन का कहना है कि अभाव से भाव की उत्पत्ति होती है, जैसे बीज के नष्ट होने पर ही अंकुर फूटता है। वाचस्पति मिश्र इसका खंडन करते हुए कहते हैं कि "असत् (अभाव) का कोई कारण नहीं हो सकता"। यदि अभाव से उत्पत्ति होती, तो किसी भी चीज़ से कुछ भी पैदा हो जाता, क्योंकि 'अभाव' तो हर जगह सुलभ है।[1]

• अद्वैत वेदांत (विवर्तवाद): वेदांतियों का कहना है कि यह जगत एक मात्र सत् (ब्रह्म) का विवर्त या आभास है, वस्तुतः सत्य नहीं है। सांख्य इसका प्रबल विरोध करता है। मिश्र का तर्क है कि **"प्रपंचप्रत्ययश्चासति बाधके न शक्यो मिथ्येति वदितुम्"** अर्थात जब तक कोई प्रबल प्रमाण इसे गलत साबित न कर दे, तब तक हमारे अनुभव में आने वाले इस जगत को मिथ्या नहीं कहा जा सकता। जगत का अनुभव ही उसकी सत्यता का प्रमाण है।[2]

• न्याय-वैशेषिक (असत्कार्यवाद): कणाद और गौतम का मत है कि कार्य उत्पत्ति से पूर्व 'असत्' होता है और कारण उसे नया जन्म देता है। वाचस्पति मिश्र इस पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि यदि कार्य पहले से असत् है, तो उसे दुनिया का कोई भी शिल्पी सत् नहीं बना सकता। **"न हि नीलं शिल्पिसहस्त्रेणापि पीतं कर्तुं शक्यते"** (हजारों कारीगर मिलकर भी नीले को पीला नहीं बना सकते)।[3]

सत्कार्यवाद का मंडन: पाँच स्तंभ

अन्य मतों के खंडन के बाद, सांख्य अपने सिद्धांत को पाँच लॉजिकल आर्गुमेंट्स (हेतु) पर खड़ा करता है, जो सांख्यकारिका (कारिका 9) में वर्णित हैं:

- **असदकरणात्:** जो असत् है, उसे बनाया नहीं जा सकता। रेत से तेल नहीं निकल सकता क्योंकि रेत में तेल की सत्ता ही नहीं है।[4]
- **उपादानग्रहणात्:** हर कार्य के लिए एक विशिष्ट सामग्री (उपादान) की जरूरत होती है। दही चाहिए तो दूध ही लेना होगा, पानी नहीं। यह नियम सिद्ध करता है कि कार्य, कारण में पहले से मौजूद था।[5]
- **सर्वसम्भवाभावात्:** यदि कार्य-कारण का नियम न हो, तो किसी भी चीज़ से कुछ भी बन जाएगा (सोने से घास और घास से सोना), पर ऐसा नहीं होता।[6]
- **शक्तस्य शक्यकरणात्:** कारण में एक 'शक्ति' होती है जो केवल उसी कार्य को पैदा करती है जो उसके भीतर संभव (शक्य) है। कुम्हार के पास मिट्टी से घड़ा बनाने की शक्ति है, कपड़े बनाने की नहीं।[7]
- **कारणभावात्:** कार्य और कारण स्वभाव से एक ही होते हैं। कपड़ा धागे से अलग नहीं है। यदि कारण सत् है, तो उससे बना कार्य असत् कैसे हो सकता है?[8]

ज्ञानमीमांसक यथार्थवाद : सत्ता से ज्ञान तक

सत्कार्यवाद केवल यह नहीं बताता कि 'चीज़ें कैसे बनती हैं', बल्कि यह भी तय करता है कि 'हम चीज़ों को कैसे जानते हैं'। डॉ. रामनाथ झा द्वारा संपादित सांख्यदर्शन के अनुसार, सांख्य की ज्ञानमीमांसा पूरी तरह यथार्थवादी है।

सांख्य में ज्ञान की प्रक्रिया का विश्लेषण करने पर हम पाते हैं कि 'प्रमा' (यथार्थ ज्ञान) का आधार 'विषय' की स्वतंत्र सत्ता है। जब इन्द्रियां किसी विषय (जैसे घट) के संपर्क में आती हैं, तो बुद्धि उस विषय का आकार ग्रहण करती है। इसे **'अध्यवसाय'** कहते हैं।[9]

यथार्थवाद का मूल तर्क:

सांख्य मानता है कि 'विषय' बुद्धि या मन की रचना नहीं हैं। वे 'प्रकृति' के परिणाम हैं। चूँकि सत्कार्यवाद के अनुसार प्रकृति 'सत्' है, अतः उसके परिणाम (पहाड़, नदी, शरीर) भी 'सत्' हैं। डॉ. झा स्पष्ट करते हैं कि ज्ञानमीमांसा में "विषय वे हैं जो विषयी (बुद्धि) को अपने रूप में ढाल लेते हैं" **(विसिन्वन्ति विषयिणमनुबध्नन्ति)**।[10]

यदि हम वेदांत की तरह जगत को मिथ्या मान लें, तो हमारा ज्ञान भी 'मिथ्या ज्ञान' होगा। यदि हम बौद्धों की तरह शून्यवाद मानें, तो ज्ञान निराधार होगा। लेकिन सांख्य कहता है कि ज्ञान का विषय 'सत्' है, इसलिए ज्ञान 'प्रमा' है। यही 'ज्ञानमीमांसक यथार्थवाद' है।

सत्कार्यवाद का वैज्ञानिक सत्यापन : एक नैदानिक अध्ययन

दर्शनशास्त्र की प्रयोगशाला अक्सर मानव मस्तिष्क होती है, लेकिन सत्कार्यवाद की सबसे बड़ी शक्ति यह है कि इसे आधुनिक विज्ञान की कसौटी पर भी कसा जा सकता है। आकांक्षा अनुपम और आर. आर. द्विवेदी द्वारा किया गया शोध पत्र **"Application of Satkaryavada based on theory of Karya-Karana Vada"** इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

अध्ययन का स्वरूप

इस अध्ययन में सत्कार्यवाद के सिद्धांतों को 'आनाह' रोग की चिकित्सा में लागू किया गया । शोधकर्ताओं ने एक परिकल्पना बनाई, यदि सत्कार्यवाद सही है, तो 'हरितकी' औषधि में रोग को ठीक करने की 'शक्ति' पहले से विद्यमान होनी चाहिए ।

रोगियों को दो समूहों में बाँटा गया:

- ❖ समूह A: 26 रोगी, जिन्हें 'हरितकी' (सत् कारण) दी गई ।
- ❖ समूह B: 12 रोगी, जिन्हें 'प्लेसीबो' या गेहूँ के आटे की गोली (असत् कारण) दी गई ।

परिणाम और दार्शनिक विश्लेषण

परिणाम चौंकाने वाले थे और सत्कार्यवाद के तर्कों का प्रत्यक्ष प्रमाण थे:

- ❖ समूह A (हरितकी): 84.21% रोगियों को अनियमित मल प्रवृत्ति में लाभ मिला ।
- ❖ समूह B (प्लेसीबो): परिणाम नगण्य या बहुत कम प्रभावी रहे । सांख्यिकीय दृष्टि से हरितकी के परिणाम अत्यधिक सार्थक थे ।

दार्शनिक हेतुओं का सत्यापन:

- **शक्तस्य शक्यकरणात्:** हरितकी में रेचन करने की स्वाभाविक 'शक्ति' थी, इसलिए उसने कार्य किया । प्लेसीबो (गेहूँ का आटा) में वह शक्ति नहीं थी, इसलिए 'इच्छा' या 'भ्रम' से रोग ठीक नहीं हुआ । यह सिद्ध करता है कि कारण की शक्ति ही कार्य को जन्म देती है ।
- **असदकरणात्:** प्लेसीबो में औषधीय गुण 'असत्' थे, इसलिए उससे आरोग्य रूपी 'सत्' कार्य उत्पन्न नहीं हुआ ।
- **उपादानग्रहणात्:** जैसे दही के लिए दूध चाहिए, वैसे ही 'विबंध' तोड़ने के लिए हरितकी जैसा विशिष्ट उपादान ही चाहिए था ।

यह प्रयोग सिद्ध करता है कि सांख्य का दर्शन केवल किताबी बातें नहीं हैं । जब हम कहते हैं कि "कारण में कार्य छिपा है", तो हम एक वैज्ञानिक सत्य बोल रहे होते हैं। हरितकी ने कार्य इसलिए किया क्योंकि उसके अणुओं में वह कार्य 'अव्यक्त' रूप में मौजूद था ।

निष्कर्ष

इस संपूर्ण विवेचन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि सांख्य दर्शन का भवन 'सत्कार्यवाद' की जिस नींव पर खड़ा है, वह अत्यंत सुदृढ़ और वैज्ञानिक है । वाचस्पति मिश्र द्वारा सांख्यतत्त्वकौमुदी में किए गए खंडन-मंडन से यह स्पष्ट होता है कि जगत आकस्मिक दुर्घटना या भ्रम नहीं है, बल्कि एक वास्तविक परिणाम है ।

यही तत्त्वमीमांसा सांख्य की ज्ञानमीमांसा को जन्म देती है। चूँकि जगत 'सत्' है, इसलिए उस जगत का हमारा ज्ञान भी 'यथार्थ' है। यह 'ज्ञानमीमांसक यथार्थवाद' कोरी कल्पना नहीं है, बल्कि इसे हरितकी और आनाह जैसे व्यावहारिक और वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा सिद्ध किया जा सकता है । आकांक्षा अनुपम का शोध यह दिखाता है कि यदि हम 'सत् कारण' का प्रयोग नहीं करेंगे, तो 'सत् परिणाम' की अपेक्षा करना व्यर्थ है ।

अतः, सांख्य दर्शन हमें सिखाता है कि सत्य को बाहर से थोपा नहीं जाता, वह भीतर ही विद्यमान होता है—चाहे वह मिट्टी में घड़ा हो, हरितकी में आरोग्य हो, या हमारी बुद्धि में ज्ञान । हमें बस उसे अनावृत करना होता है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

प्राथमिक स्रोत:

- ईश्वरकृष्ण. सांख्यकारिका. साथ में सांख्यतत्त्वकौमुदी (वाचस्पति मिश्र) और तत्त्वविमर्श (हिन्दी व्याख्या). संपादित एवं व्याख्यात डॉ. सन्तनारायण श्रीवास्तव्य. वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, 2023.
- झा, रामनाथ, सं. सांख्यदर्शन: मूल संस्कृत, हिन्दी अनुवाद एवं टिप्पणी सहित. दिल्ली: विद्यानिधि प्रकाशन, 2021.
- ईश्वरकृष्ण. सांख्यकारिका: 'माठरवृत्ति' संवलिता. व्याख्याकार पं. थानेशचन्द्र उप्रेती. दिल्ली: चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, 2024.

पादटिप्पणी:

[1] ईश्वरकृष्ण, सांख्यकारिका (सांख्यतत्त्वकौमुदीसहित), सं. डॉ. सन्तनारायण श्रीवास्तव्य (वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, 2023), 100.

[2] ईश्वरकृष्ण, सांख्यकारिका (सांख्यतत्त्वकौमुदी सहित), सं. डॉ. सन्तनारायण श्रीवास्तव्य (वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, 2023), 100.

[3] ईश्वरकृष्ण, सांख्यकारिका (सांख्यतत्त्वकौमुदीसहित), सं. डॉ. सन्तनारायण श्रीवास्तव्य (वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, 2023), 101.

[4] ईश्वरकृष्ण, सांख्यकारिका (सांख्यतत्त्वकौमुदीसहित), सं. डॉ. सन्तनारायण श्रीवास्तव्य (वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, 2023), 103.

[5] ईश्वरकृष्ण, सांख्यकारिका (सांख्यतत्त्वकौमुदी सहित), सं. डॉ. सन्तनारायण श्रीवास्तव्य (वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, 2023), 105.

[6] ईश्वरकृष्ण, सांख्यकारिका (सांख्यतत्त्वकौमुदीसहित), सं. डॉ. सन्तनारायण श्रीवास्तव्य (वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, 2023), 105.

[7] ईश्वरकृष्ण, सांख्यकारिका (सांख्यतत्त्वकौमुदीसहित), सं. डॉ. सन्तनारायण श्रीवास्तव्य (वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, 2023), 106.

[8] ईश्वरकृष्ण, सांख्यकारिका (सांख्यतत्त्वकौमुदीसहित), सं. डॉ. सन्तनारायण श्रीवास्तव्य (वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, 2023), 108.

[9] रामनाथ झा, सं., सांख्यदर्शन (दिल्ली: विद्यानिधि प्रकाशन, 2021), 64.

[10] रामनाथ झा, सं., सांख्यदर्शन (दिल्ली:विद्यानिधि प्रकाशन, 2021),64.